गौतम बुद्ध महाविद्यालय

सम्बद्ध-सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

पचपेड़वा, सांगठ, संतकबीर नगर (उ.प्र.)

(शिक्षा संकाय)

~~स्काउट गाइड~~

सत्र : 2025-2026

and Education

gnment work.)

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका का नाम समकालीन भारत और शिक्षा

शिक्षण विषय Assignment work

महाविद्यालय अनुक्रमांक ____________________

विश्वविद्यालय द्वारा आवंटित अनुक्रमांक ____________________

on. Describe in detail the historical Context of the establishment of Radhakrishnan Commission (1948-49), its main objectives and the Major recommendations made for reorganizing the higher education system of independent ~~india~~ India.

(राधाकृष्णन आयोग - 1948-49 की स्थापना के ऐतिहासिक सन्दर्भ, इसके मुख्य उद्देश्यों और स्वतन्त्र भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन के लिए की गई प्रमुख सिफारिशों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।)

∴ प्रस्तावना ∴ 'राधाकृष्णन आयोग', जिसे औपचारिक रूप से विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) के नाम से जाना जाता है, की स्थापना भारत सरकार द्वारा नव स्वतन्त्र भारत की विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली का आकलन और सुधार करने के लिए की गई थी। प्रसिद्ध दार्शनिक शिक्षाविद और भारतीय गणतन्त्र के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की अध्यक्षता में गठित इस आयोग ने भारत की आधुनिक उच्च शिक्षा संरचना की नींव रखी।

भारत की स्वतन्त्रता के दौर में उच्च शिक्षा के लक्ष्यों, संरचना और प्रासंगिकता को पुनर्परिभाषित करने की अत्यावश्यक आवश्यकता थी। राधाकृष्णन आयोग ने न केवल इन चिंताओं का समाधान किया बल्कि दूरदर्शी सिफारिशें भी दी जिन्होंने दशकों तक भारत की विश्वविद्यालय प्रणाली को आकार दिया है।

राधाकृष्णन आयोग की स्थापना 4 नवम्बर 1948 को डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में स्वतन्त्र भारत की पहली शिक्षा समिति के रूप में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली की कमियों को दूर करना और भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप उच्च शिक्षा का पुनर्गठन करना था।

❖ ऐतिहासिक संदर्भ ❖
(HISTORICAL CONTEXT)

- **स्वतन्त्रता के बाद की आवश्यकता :**
  1947 में आजादी मिलने के बाद एक ऐसे भारतीय शिक्षा तन्त्र की आवश्यकता थी, जो राष्ट्रीय पुनर्निर्माण, तकनीकी उन्नति और सांस्कृतिक विकास में सहायता कर सके।

- **पुरानी व्यवस्था में सुधार :**
  ब्रिटिश कालीन शिक्षा प्रणाली व्यवहारिक नही थी और केवल प्रशासनिक क्लर्क तैयार करने पर केन्द्रित थी। राधाकृष्णन आयोग का गठन इसे व्यापक रूप से सुधारने के लिए किया गया था।

- **उच्च शिक्षा में वृद्धि :**
  स्वतन्त्रता के बाद उच्च शिक्षा की माँग बढ़ी जिससे विश्वविद्यालयों में भीड़भाड़ और शिक्षा के स्तर में गिरावट आई। इसे प्रबंधित करना एक प्रमुख कारण था।

- प्रमुख सिफारिशें :

आयोग ने 1949 में अपनी रिपोर्ट सौंपी जिसके आधार पर शिक्षण गुणवत्ता में सुधार, व्यवसायिक शिक्षा, महिला शिक्षा और 1953 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना की गई।

आयोग के मुख्य फोकस :

- लक्ष्य : विश्वविद्यालय शिक्षा को सामाजिक- आर्थिक विकास से जोड़ना।

- मूल्य : शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाएं, लेकिन साथ ही साथ शिक्षा का उद्देश्य अनुसंधान और ज्ञान में वृद्धि करना।

- शिक्षा के तीन मुख्य उद्देश्य :

ज्ञान और संस्कृति का संरक्षण, ज्ञान का विकास और ज्ञान का प्रसार।

उद्देश्य :
OBJECTIVES :

स्वतन्त्रता के बाद के भारत में विश्वविद्यालय शिक्षा को नया रूप देने में अग्रणी रहे राधाकृष्णन आयोग के प्रमुख उद्देश्य भारत में विश्वविद्यालय शिक्षा की स्थिति का आकलन करना और इसे राष्ट्रीय विकास, व्यक्तिगत उन्नति और वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाने के

लिए उपाय सुझाना था। इसका लक्ष्य एक सशक्त और समावेशी उच्च शिक्षा प्रणाली के माध्यम से जिम्मेदार नागरिक, कुशल पेशेवर और प्रबुद्ध व्यक्ति तैयार करना था।

Report of the University Education Commission in p. 1

"To report on Indian Universities and suggest improvement and extension that may be desirable to suit present and future requirements of the Country"

आयोग का मुख्य उद्देश्य बिन्दुवार निम्न-लिखित है:

1- तत्कालीन भारतीय विश्वविद्यालयी शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करके उसमें व्याप्त कमियों (दोषों) का पता लगाना।

2- विश्वविद्यालयों के प्रशासन व वित्त के बारे में सुझाव देना।

3- सम्बद्ध महाविद्यालयों के प्रशासन एवं वित्त के बारे में तथा इनमें शिक्षा एवं परीक्षा के स्तरों में उन्नयन हेतु सुझाव देना।

4- उच्च शिक्षा में सुधार करना।

5- लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास करना।

6- शिक्षा का आधुनिकीकरण करना।

7. शिक्षको के वेतन, कार्य, स्थितियों और सेवा शर्तों में सुधार करना।

8- विश्वविद्यालयी शिक्षा में व्यवसायिक, तकनीकी और कृषि शिक्षा को बढ़ावा देना।

9. ग्रामीण विकास के लिए ग्रामीण विश्वविद्यालयों की स्थापना का सुझाव देना।

10. विश्वविद्यालयों में शोध सुविधाओं का विस्तार करना।

11. महिला शिक्षा के लिए समान अवसर और उचित सुविधायें प्रदान करना।

12. स्वतन्त्र भारत की जरूरतों के अनुरूप उच्च शिक्षा प्रणाली आमूलचूल सुधार कर पुनर्गठन करना।

13- पाठयक्रम का आधुनिकीकरण करना।

14- संस्कृति का संरक्षण करना।

15. नेतृत्व क्षमता विकसित करना।

16- विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण, मानसिक विकास और आत्म-विश्वास के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना।

ः प्रमुख झु

ः प्रमुख सिफारिशें (सुझाव) ः

ः Major Recommendations ः

राधाकृष्णन आयोग (1948-49) जिसे विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग भी कहा जाता है ने उच्च शिक्षा में व्यापक सुधारों की सिफारिश की। प्रमुख सुझावो में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना, 12 वर्षीय पूर्व- विश्वविद्यालय शिक्षा (10+2+3 ढाँचा), ग्रामीण विश्व विद्यालयो की स्थापना, शिक्षको के लिए बेहतर वेतन और शिक्षा को 'समवर्ती सूची' में डालना शामिल था।

- UGC की स्थापना :
  उच्च शिक्षा के मानको को निर्धारित करने और धन आवंटित करने के लिए एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना

- शिक्षा संरचना :
  विश्वविद्यालय पूर्व शिक्षा 12 वर्ष की होनी चाहिए।

- शिक्षक की स्थिति :
  शिक्षको का वेतन बढ़ाने और उनके कार्य के घंटे निश्चित करने की सिफारिश।

- ग्रामीण विश्वविद्यालय :
  ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण विश्वविद्यालयों और कालेजों की सिफारिश।

- शिक्षा का माध्यम :
  शिक्षा का माध्यम संघीय भाषा (हिन्दी) या क्षेत्रीय भाषा हो।

- महिला शिक्षा :
  महिला शिक्षा को बढ़ावा देने और महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा की बेहतर व्यवस्था की सिफारिश।

- समवर्ती सूची :
  उच्च शिक्षा को संविधान की समवर्ती सूची में शामिल करने का सुझाव ताकि केन्द्र और राज्य मिलकर काम कर सकें।

- तकनीकी और पेशेवर शिक्षा :
  पारम्परिक शिक्षा के साथ-साथ व्यवसायिक और तकनीकी शिक्षा पर जोर।

डॉ० एस राधाकृष्णन की अध्यक्षता में का गठित इस आयोग ने स्वतन्त्रता के बाद उच्च शिक्षा की नींव रखी।

- 12 वर्षीय पूर्व- विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली :
  राधाकृष्णन आयोग ने पूर्व की खंडित

संरचना को प्रतिस्थापित करते हुए 12 वर्षीय पूर्व- विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली की सिफारिश की। इस सिफारिश ने 10+2+3 शिक्षा माडल की नींव रखी जो बाद में भारत की शैक्षणिक संरचना में मानक प्रारूप बन गया।

उच्च शिक्षा में एकीकृत दृष्टिकोण:

आयोग ने सार्वांगीण विश्वविद्यालय शिक्षा की वकालत की जिसमें निम्नलिखित का समावेश हो:

- केन्द्रीय शिक्षा- शासन, नागरिक कर्तव्यो और सामाजिक जिम्मेदारियों पर ध्यान केन्द्रित करना।
- उदार शिक्षा:- मानविकी, सामाजिक विज्ञान और बौद्धिक अन्वेषण पर केंद्रित।
- व्यवसायिक शिक्षा:- कौशल, व्यवसायिक प्रशिक्षण, और रोजगार क्षमता पर ध्यान केन्द्रित।

∴ प्रभाव ∴

राधाकृष्णन आयोग ने भारत के उच्च शिक्षा परिदृश्य को कई मायनों में बदल दिया:

- स्वतन्त्रता के बाद की जरूरतो के लिए शिक्षा को सुलभ और प्रासंगिक बनाया।
- ग्रामीण और क्षेत्रीय आयामों को राष्ट्रीय चर्चा में शामिल किया।
- आधुनिक और पारम्परिक शैक्षिक आदर्शों का सन्तुलन।

- भारत के युवाओं को वैश्विक चुनौतियों के लिए तैयार करना।

आज भी राधाकृष्णन आयोग को भारत के शैक्षिक इतिहास में सबसे प्रभावशाली और दूरदर्शी दस्तावेज माना जाता है।

निष्कर्ष
CONCLUSION

भारत के ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर होने के साथ-साथ राधाकृष्णन आयोग की सिफारिशे अत्यन्त प्रासंगिक बनी हुई है। यह 21 वी सदी के भारत में शैक्षिक नीतियो को आकार देना जारी रखता है। राधाकृष्णन आयोग (1948-49) भारत की शैक्षिक प्रगति मे एक मील का पत्थर था। इसने एक सशक्त, समावेशी, और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली की रूपरेखा तैयार की। गुणवत्ता, भाषा विविधता, ग्रामीण समावेशन और संस्थागत प्रशासन पर इसके जोर ने भारत की उच्च शिक्षा को औपनिवेशिक अवशेषों से एक आधुनिक प्रगतिशील प्रणाली में परिवर्तित करने में मदद की। सात दशक बीत जाने के बाद भी राधाकृष्णन आयोग के सिद्धान्त भारत की शैक्षणिक और प्रशासनिक संरचनाओं में गहराई से समाहित है जो अतीत के ज्ञान से प्रेरित होकर इसके भविष्य का मार्गदर्शन कर रहे है।

Question-2 Examine the historical context of Banasthali Vidyapeeth's establishment as well as its role in Panchmukhi education and women's empowerment.

(वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना के ऐतिहासिक सन्दर्भ के साथ-साथ पंचमुखी शिक्षा और महिला सशक्तिकरण में इसकी भूमिका का परीक्षण करें।)

'वनस्थली विद्यापीठ' की स्थापना 6 अक्टूबर 1935 को स्वतन्त्रता सेनानी पंडित हीरालाल शास्त्री और श्रीमती रतन शास्त्री ने अपनी पुत्री शांताबाई के निधन के बाद, बालिकाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण के उद्देश्य से की थी। यह संस्थान टोंक जिले (राजस्थान) के निवाई के पास स्थित है, जिसे 1983 में 'मानित विश्वविद्यालय' (Deemed University) का दर्जा मिला जो भारतीय संस्कृति और आधुनिक शिक्षा का संगम है।

वनस्थली विद्यापीठ का ऐतिहासिक संदर्भ:

- **प्रेरणा और स्थापना (1935):** पंडित हीरालाल शास्त्री और रतन शास्त्री ने 6 अक्टूबर 1935 को 'श्री शांताबाई कुटीर' की स्थापना की, जो कालान्तर में वनस्थली विद्यापीठ के रूप में विकसित हुई। इसका उद्देश्य बालिकाओं को पारम्परिक ज्ञान

के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा प्रदान करना था।

- **उद्देश्य:**
मुख्य मुख्य उद्देश्य बालिकाओं को समाज में सम्मान जनक स्थान दिलाने के लिए शिक्षा प्रदान करना था। यह संस्था रूढ़िवादी समाज के खिलाफ महिलाओं की शिक्षा के लिए एक प्रमुख केन्द्र बनी।

- **नामकरण और विकास (1943):**
'वनस्थली विद्यापीठ' नाम 1943 में अपनाया गया, और इसी वर्ष स्नातक पाठ्यक्रम शुरू किए गए।

- **पंचमुखी शिक्षा प्रणाली:**
संस्था शिक्षा के पांच स्तम्भो - शारीरिक, व्यावहारिक, ललित कला, नैतिक और बौद्धिक विकास पर आधारित 'पंच मुखी शिक्षा' प्रणाली को अपनाती है।

- **मान्यता (1983):**
1983 ई० में इसे UGC द्वारा 'मानित विश्वविद्यालय (Deemed University) के रूप में मान्यता दी गई।

- **आवासीय विश्वविद्यालय:**
यह एक पूरी तरह से आवासीय महिला विश्वविद्यालय है, जो पूर्व-प्राथमिक से लेकर पी० एच० डी० स्तर की शिक्षा प्रदान करता है।

यह संस्था आज भारत में महिला उच्च शिक्षा के सबसे प्रमुख केन्द्रो में से एक है।

❊ वनस्थली की पंचमुखी शिक्षा ❊

❊ Panchmukhi Education ❊

'पंचमुखी शिक्षा' यह सार्वांगीण शिक्षा देने की दृष्टि से एक विशिष्ट शिक्षा योजना है। वनस्थली की पंचमुखी शिक्षा के पाँच अंग है जो इस प्रकार है:

1. शारीरिक शिक्षा
2. व्यावहारिक शिक्षा
3. ललित कला विषयक शिक्षा
4. नैतिक शिक्षा
5. बौद्धिक शिक्षा

1- शारीरिक शिक्षा ❊

इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की जैसे लाठी, लेजिम, गदका, डम्बल्स जोड़ी, तलवार, भाला सैनिक कवायद, बाल कवायद आदि की शिक्षा दी जाती है। नाना प्रकार के आधुनिक और पुराने खेल (कबड्डी, खो-खो, हॉकी, बास्केटबाल, वॉलीवॉल, बैडमिण्टन साथ ही साईकिल सवारी, घुड़सवारी, तथा तैरना सिखाने की भी व्यवस्था है। योगिक आसन, एन.सी.सी., बन्दूकचलाना, भी छात्राओं को सिखाया जाता है। शारीरिक उच्च शिक्षा हेतु यहा डिग्री प्रदान की जाती है। ग्लाइडिंग फ्लाइंग क्लब की स्थापना भी नई की गई है। इस प्रकार शारीरिक शिक्षा का उचित प्रशिक्षण वनस्थली विद्यापीठ की पहचान है।

2. व्यावहारिक शिक्षाः

इसके अन्तर्गत घर गृहस्थी के काम जिसमें भोजन बनाने तथा दूसरे सम्बन्धित काम जैसे पापड़ बिस्कुट आदि बनाने का समावेश हो जाता है। कातना, रंगाई, छपाई, सीना व कशीदा करना, दर्जी का काम, खिलौना बनाना, जिल्दसाजी करना, क्ले माडलिंग, चमड़े के पर्स, तेल, साबुन, पाउडर, वेसलीन आदि बनाने का व्यावहारिक प्रशिक्षण छात्राओं को दिया जाता है। पिछले कुछ वर्षों से सामूहिक श्रम-कार्य की योजना भी चल रही है।

3. ललित कला विषयक शिक्षाः

विभिन्न स्तर पर संगीत और चित्रकला दोनो मे से किसी एक की शिक्षा छात्राओ को मिल सके इसकी व्यवस्था विद्यापीठ के शिक्षाक्रम मे की गई है। नृत्य शिक्षा की भी व्यवस्था है। विभिन्न कलाओ के लिए प्रशिक्षण एवं डिग्रीयां प्रदान की जाती है।

4. नैतिक शिक्षाः

छात्राओ के नैतिक व्यक्तित्व का विकास करना तथा उनमे सर्वधर्म समभाव पैदा करना नैतिक शिक्षा का लक्ष्य है। सर्वधर्म समन्वय की दृष्टि को ध्यान मे रखते हुए विद्यापीठ की छात्रावास मे होने वाली सामूहिक प्रार्थनाए, साप्ताहिक बातचीत, वातावरण की स्वच्छता विद्यापीठ की नैतिक शिक्षा के प्रमुख साधन है।

5. बौद्धिक शिक्षाः

छात्राओ के विकास के साथ-साथ इस बात का ध्यान रखा जाता था कि आज के प्रचलित शिक्षा

प्रणाली के दोषों से यहां की शिक्षा यथासंभव मुक्त रहे प्राकृतिक तथा सामाजिक ज्ञान की शिक्षा प्रारम्भ से ही दी जाती है। शिक्षण पद्धति में सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण, भ्रमण और यात्रा, पर्व-समारोहों, और नाटक चुने हुए विषयो पर तैयार की जाने वाली प्रयोजनाओं आदि का यथाआवश्यक उपयोग किया जाता है।

ः वनस्थली विद्यापीठ और महिला सशक्तिकरण ः

'वनस्थली विद्यापीठ' महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान है, जो 82 वर्षों से अधिक समय से 'सा विद्या या विमुक्तये' (शिक्षा ही मुक्ति का मार्ग है) के सिद्धान्त पर काम कर रहा है। यह संस्थान पंचमुखी शिक्षा (शारीरिक, व्यावहारिक, सौंदर्यपरक, नैतिक और बौद्धिक विकास) के माध्यम से छात्राओं को आत्मनिर्भर, शिक्षित और नेतृत्व करने में सक्षम बनाता है, साथ ही अटल इन्क्यूबेशन सेंटर के माध्यम से स्टार्टअप्स को बढ़ावा देकर आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

ः भूमिका ः

- पंचमुखी शिक्षा प्रणाली ः

विद्यापीठ का अनूठा शैक्षिक ढाँचा, जो शारीरिक, व्यावहारिक, सौन्दर्यपरक, नैतिक और बौद्धिक पहलुओं पर जोर देता है,

छात्राओं का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करता है।

- आत्म निर्भरता और कौशल विकास:
यहा छात्राओं को सिलाई, कम्प्यूटर, अंग्रेजी बोलने और आत्मरक्षा जैसे व्यावसायिक कौशल सिखाए जाते है ताकि वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र बन सके।

- उद्यमिता को बढ़ावा: (Start up India)
अटल इन्क्यूबेशन सेंटर (AIC) की स्थापना के बाद से यह संस्थान महिला-आधारित स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित कर रहा है, जिसमे 1300 से अधिक नौकरियां पैदा हुई है और उद्यमिता को बढ़ावा मिला है।

- महिला अध्ययन केन्द्र: (WSRC)
बनस्थली का महिला अध्ययन केन्द्र लोक गीतों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देता है और विभिन्न सामाजिक मुद्दो (जैसे- दहेज, पर्दा प्रथा, घरेलू हिंसा) पर जागरूकता कार्यशालाएं आयोजित करता है।

- नेतृत्व कौशल का विकास:
संस्थान की उच्च समितियो और विभागों में महिलाओं की प्रमुख भागीदारी है, जो न केवल निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है बल्कि उन्हे एक आदर्श लीडर के रूप में तैयार करता है।

• **सांस्कृतिक और नैतिक शिक्षा:** यहा के शिक्षा कार्यक्रम में भारतीय मूल्यो के साथ-साथ वैज्ञानिक उपलब्धियों का मिश्रण है जो लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ नैतिक रूप से भी सुदृढ़ बनाता है।

• **महिला अध्ययन एवं अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना:** वनस्थली विश्वविद्यालय में दसवी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत महिला अध्ययन एवं अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना की गई थी।

• **प्रशिक्षण कार्यक्रम:** वनस्थली विद्यापीठ के महिला एवं बाल विकास समिति (डब्ल्यू एस आर सी) ने समय-समय पर विभिन्न लक्षित समूहो के लिए अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए है।

: उपसंहार :
: CONCLUSION :

वनस्थली विद्यापीठ को शिक्षा नेतृत्व के लिए डॉ॰ सरला बिड़ला स्त्री शक्ति सम्मान 2022 से अलंकृत किया गया। अपनी स्थापना से ही वनस्थली विद्यापीठ महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने में अग्रणी रहा है। पिछले आठ दशको में वनस्थली ने जीवन के सभी क्षेत्रों में महिला नेतृत्वकर्ताओं

को पोषित किया है। संस्थागत संरचना के भीतर भी महिला नेतृत्व पर विशेष बल दिया जाता है।

वनस्थली विद्यापीठ ने महिलाओं के लिए एक ऐसा पारिस्थितिक तंत्र (ECO-system) बनाया है, जहाँ वे न केवल शिक्षा प्राप्त करती हैं अपितु आत्मविश्वास के समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए पूरी तरह से तैयार होती है। वनस्थली विद्यापीठ का 'पंचमुखी शिक्षा माडल' समग्र शिक्षा प्रदान करने का एक अभिनव तरीका है जो प्रत्येक छात्रा को अपनी अन्तर्निहित क्षमता को पहचानने और प्राप्त ज्ञान का सम्यक उपयोग करने का अधिगम (Learning) प्रदान करता है। वनस्थली विद्यापीठ का लोगो (LOGO) हमारे प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ 'सा विद्या या विमुक्तये' की भावना से ओत-प्रोत है। वनस्थली विद्यापीठ जो महिला शिक्षा में अग्रणी स्थान रखता है, भविष्य के लिए महिलाओ के समग्र उत्थान अपना अमूल्य योगदान प्रदान करता रहेगा।